ISSN 3107-8583 www.loksanskruti.in
लोक-संस्कृति
पीयर रिव्यूड बहुविषयक ऑनलाइन ई-पत्रिका

आलेख आमंत्रण

लोक-संस्कृति ई-पत्रिका (त्रैमासिक) के **लोक में परिणय संस्कार और परंपरा** विशेषांक हेतु

सम्माननीय,

परिणय-संस्कार भारतीय-संस्कृति का एक उत्कृष्ट स्वरूप होते हुए सामाजिक ताने-बाने में इस प्रकार रचा बसा है कि बिना इसके भारतीय समाज की कल्पना अकल्पनीय सी लगती है। यह मात्र दो व्यक्तियों के बीच का संबंध नहीं, बल्कि दो परिवारों, दो वंशों और कभी-कभी दो समुदायों का सामाजिक, सांस्कृतिक संबंध होता है जो धार्मिक और सामाजिक जीवन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण कड़ी होते हुए पारस्परिक स्थाई सामाजिक संबंध, परिवार, रिश्तों, नातों को स्थापित करने में सर्वाधिक समर्थ उपकरण है। ऋग्वेद में वर्णित यम व यमी का संवाद विवाह संस्था के सनातन स्वरूप को पुष्ट करता है।

वैदिक-साहित्य में वर्णित आठ प्रकार के विवाहों के अलावा लोक देशाचारानुसार परिणय की भिन्न-भिन्न रीति-रिवाजों, परंपराओं एवं नियमों का सरलीकरण और परिवर्तन करते हुए उनमें सर्वजनहिताय की लोक-भावना का समावेश करते हुए समृद्ध करता है; हम परिणय संबंधी लोक मान्यताओं, लोक-गाथाओं और लोकगीतों के विविध रूपों को ग्रन्थों में भी उपलब्ध पाते हैं। परिणय संस्कार, लोक मान्यताएँ, शुभ-अशुभ समय का विचार, गुण-वर्ग मिलान, नाम-नक्षत्र आदि पर आधारित परम्पराओं का समावेश कर विभिन्न क्षेत्रीय विशेषताओं को समेटे हुए है।

आज लोक के विभिन्न पक्षों पर शोध कार्य हो रहा है ऐसे में हमें यह जानना आवश्यक प्रतीत होता है कि परिणय संस्कार में अनेक वैवाहिक रीतियाँ, रस्में, गीत, शिल्प और अनुष्ठान शामिल हैं आखिर इनके निहितार्थ क्या हैं? यह क्या कुछ इंगित करते हैं? इनका प्रकृति और समाज से क्या तादात्म्य है? परिणय संस्कार से सम्बंधित कथाओं, लोक गाथाओं के यथार्थ क्या हैं? आज आधुनिकता और शहरीकरण के कारण लोक की बहुत सी रीतियाँ और परम्पराएँ न केवल प्रचलन से बाहर होती जा रही हैं वरन ये अभी तक लिपिबद्ध नहीं की जा सकीं हैं। विलुप्त होती इन्हीं रीति-परंपराओं को सहेजने और प्रकाश में लाने के लिए हमने **लोक में परिणय संस्कार और परंपरा** विशेषांक की परिकल्पना की हैं जिसका उद्देश्य लोक द्वारा गृहीत परिणय-संस्कार संबंधी बातों को इस अंक में समाहित करना है। यह सभी व्यवस्थाएँ लोक में किसी भी देश, काल, समाज, जाति, वर्ग आदि-आदि के द्वारा भिन्न-भिन्न प्रकार से या समान रूप से निर्वाह की जाती रहीं हैं अथवा की जा रही हैं। आलेख लेखन हेतु कुछ विषय संकेत यहाँ दिए जा रहे हैं -

- परिणय-संस्कार की विभिन्न रस्मों, रीतियों और परम्पराओं के निहितार्थ
- लोक में वैवाहिक परम्परा से संबंधित कथा व कहावतें
- सात अथवा चार फेरों का पौराणिक महत्व
- परिणय संस्कार में समाहित धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक सन्देश एवं लोक कल्याण की भावना
- देवलोक व परिणय संस्कार
- जनजातीय एवं घुमंतू समुदायों की परिणय से जुड़ी अनूठी परंपराएँ एवं मान्यताएँ
- वेदों, पुराणों में वर्णित एवं लोक में प्रचलित विभिन्न प्रकार के परिणय संस्कार
- परिणय संस्कार : लोक नृत्य, लोक गायन, लोक शिल्प
- परिणय संस्कार में निहित प्रथाओं के पर्यावरणीय पक्ष
- वैवाहिक अनुष्ठान तथा पितृ देव, कुलदेव, ग्रामदेव आदि ।
- विवाह पूर्व एवं पश्च संस्कार और लोकाचार

सुधी अध्येता इनसे इतर शीर्षकों पर भी प्रमाणिक लेखन करके भेज सकते है, संपादक मण्डल उन पर विचार कर यथासंभव सम्मिलित करने का प्रयत्न करेगा। उपर्युक्त विषयक मौलिक और अप्रकाशित होने के प्रमाण-पत्र के साथ लगभग 2000 शब्दों में आलेख लेखक के संक्षिप्त परिचय-छायाचित्र सहित ई-मेल info@loksanskruti.in पर दिनाँक **01 मार्च 2026** तक अपेक्षित है।

(बी. के. सिंहल)
(9351503555)
अतिथि संपादक

विशेषांक संपादक - डॉ. संगीता सिंह (8770754517), डॉ. अक्षय कुमार जैन (7354965490),
डॉ. ललिता लोधा (8319063348), डॉ. अनिता सोनी (9450031922), गौरव मंडलोई (9669744901)